जागो... जैनों, जागो...

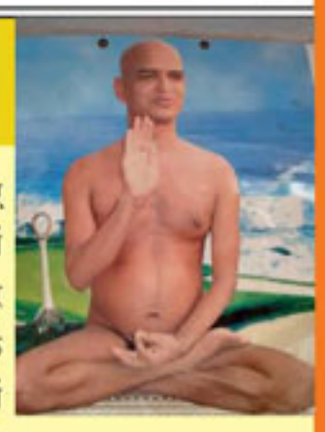

अनुपमा जैन, इन्दौर । कर्नाटक में चातुर्मासरत जैन आचार्य 108 श्री कामकुमार नंदीजी की रात्रि के समय निर्मम हत्या से संपूर्ण जैन समाज क्षुब्ध है। जैसे ही यह समाचार ज्ञात हुआ पूरे भारत और विश्व भर में रहने वाले जैन धर्मावलंबियों के मन में दुख, करुणा और रोष उत्पन्न हुआ । एक दिगंबर साधु, जो अपने पास एक पिच्छी, कमंडल के अलावा कुछ भी नहीं रखते, एक अहिंसक साधु जो चींटी से भी सूक्ष्मजीवों की भी हिंसा ना हो, इसलिए 4 महीने वर्षावास में एक ही स्थान पर रहते हैं। जैनागम की चर्या का पालन करते हुए निरंतर धर्म साधना में लगे रहते हैं। ऐसे निस्सहाय आचार्य की हत्या करके उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े करना अत्यंत निंदनीय है। और इससे भी बढ़कर इस पूरे घटनाक्रम पर सरकार की ओर से मौन साधे रहना, हत्यारों को सजा दिलाना तो दूर, कड़ी कार्यवाही तक ना करना समाज के लिए आक्रोश का विषय है। इसीलिए पूरे देश भर में 20 जुलाई को दिगंबर और श्वेतांबर समाज के साधु संतों ने पूरे देश में भारत बंद का आह्वान किया। जैन समाज के सभी धर्मावलंबियों ने अपने अपने नगरों में स्वजनों को साथ में लेकर सड़क पर मौन जुलूस निकाला और अपना रोष व्यक्त किया। इस मौन जुलूस में महिलाओं और युवाओं ने भी सक्रियता से भाग लिया और प्रशासनिक अधिकारियों को ज्ञापन सौंप कर हत्यारों के प्रति कड़ी से कड़ी कार्यवाही करने की मांग की।

आचार्य कामकुमार नंदी महाराज जी बहुत विद्वान थे, वे इंजीनियर थे, बहुत सी विदेशी भाषा के जानकार थे, अनेक शास्त्रों की उन्होंने रचना की थी, बहुत सुंदर भजन लिखते थे और अपनी मधुर आवाज में पूर्ण भक्ति भाव से गाते भी थे, शांत स्वभाव के दयालु और तपस्वी मुनिराज थे । जिस दिन षड्यंत्र के तहत उनकी हत्या हुई उस दिन उनका उपवास और मौन व्रत था । उन्हीं की आवाज में बहुत सुंदर भजन 'छुक छुक रेल चली जीवन की' यह रचना काफी प्रसिद्ध हुई । आपने अनेक धार्मिक आध्यात्मिक कृतियों का सृजन किया है जिसमें जैन धर्म के मौलिक सिद्धांत, इतिहास, भूगोल, पर्व, स्त्रोत, श्रावक धर्म, मुनि धर्म, दशलक्षण धर्म, जिन विभूति सुधा के समान विभिन्न विषय शीर्षक शामिल हैं।

इन्दौर नगर में भी संपूर्ण दिगंबर, श्वेतांबर जैन समाज के साधु संतों ने सम्मिलित रूप से और हिन्दू समाज के प्रतिनिधियों ने भी जैन समाज के श्रद्धालुओं ने मौन जुलूस निकाले गये । राजस्थान, हरियाणा, कर्नाटक, उत्तरप्रदेश के अनेक शहरों के साथ भोपाल, ललितपुर, झाँसी, विदिशा, आगरा, दिल्ली, अहमदाबाद, जबलपुर आदि अनेक स्थानों पर इसी तरह के मौन जुलूस के माध्यम से जैन समाज ने अपना आक्रोश व्यक्त किया और व्यापारी बंधुओं ने अपने प्रतिष्ठान बंद रखें। ज्ञातव्य है कि जैन समाज भले ही अल्पसंख्यक है, लेकिन देश की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण योगदान रखता है। जैन समाज एक सभ्य, सुशिक्षित, प्रगतिशील, शांतिप्रिय और अहिंसक विचारधारा को मानने वाला समाज है। लेकिन इसका अर्थ यह कतई नहीं होना चाहिए कि जैन समाज कायर है और अपने संतों की, अपने तीर्थ स्थलों की रक्षा नहीं कर सकता। इस हेतु जैन संतों ने समाज के सक्रिय युवाओं से देश की राजनीति में और महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों पर आरुढ़ होने का निर्देश दिया। क्योंकि अब समय आ गया है कि यदि जैन समाज सत्ता और शक्ति का केंद्र बने, ताकि अपनी आवाज देश की संसद और कानून व्यवस्था तक पहुंचा सके। क्योंकि जिस तरह से वर्तमान परिस्थितियों में जैन तीर्थों पर अतिक्रमण, जैन संतों पर अत्याचार और जैन श्रावकों को गाहे-बगाहे परेशान किया जा रहा है लेकिन देश के किसी भी बड़े नेता के मुंह से एक शब्द तक नहीं निकलता ? जैन समाज के लोगों के लिए न्याय तो दूर न्याय दिलाने का आश्वासन तक नहीं दिया गया, क्या हम जैन वोटरों की कोई कीमत ही नहीं है, क्या देश में हमारा कोई स्थान ही नहीं है, विचारणीय है । इससे यह निश्चित है कि समाज को अपनी रक्षा के लिए खुद ही आगे आना होगा।

विख्यात विद्वान व लेखक डॉ. कपूरचंद्र जैन स्मृति ग्रन्थ का भव्य लोकार्पण सोनागिरजी में संपन्न हुआ

❊ डॉ कपूरचंद जी ने कपूर की भांति चारों ओर सुगंधि फैलाई : मुनि पुण्यसागर जी ❊ मूर्धन्य मनीषी तथा अद्भुत प्रतिभा के धनी थे डॉ कपूरचंद जैन : गणिनी आर्यिका स्वस्ति भूषण ❊ बुंदेलखंड विश्वविद्यालय में हो डॉ. कपूरचंद जैन पीठ की स्थापना : प्रदीप जैन आदित्य, पूर्व केन्द्रीय मंत्री

डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर । श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सोनागिरजी में मूर्धन्य मनीषी श्रद्धेय डॉ. कपूरचंद जैन खतौली के स्मृति ग्रन्थ का भव्य विमोचन समारोह पूज्य मुनि श्री पुण्य सागरजी महाराज ससंघ व गणनी आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी के ससंघ सान्निध्य में शास्त्रि परिषद के अध्यक्ष डॉ. श्रेयांस कुमार जी जैन बड़ौत की अध्यक्षता में भारत सरकार के पूर्व केन्द्रीय मंत्री प्रदीप जैन 'आदित्य' के विशिष्ट आतिथ्य में संपन्न हुआ ।

सर्वप्रथम श्रीमती ज्योति जैन झांसी व पंडित पवन दीवान मुरैना एवं डॉ. कपूरचंद्र जी खतौली के परिजनों ने मंगलाचरण किया। इसके बाद विद्वानों, अतिथियों आदि ने चित्र अनावरण व दीप प्रज्वलन किया। इस मौके पर मुनि श्री पुण्यसागरजी महाराज ने कहा कि डॉ. कपूरचंद्रजी खतौली ने कपूर की तरह दशों दिशाएं सुगंधित की। भले ही वे हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनके कार्य उन्हें सदैव जीवंत बनाए रखेंगे। वे चिंतनशील मनीषी थे। गणनी आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी ने कहा कि डॉ. कपूरचंद्रजी जितने दिन जिये शान से जिये। वे मूर्धन्य मनीषी तथा अद्भुत प्रतिभा के धनी थे। वे विविध विद्याओं में पारंगत, अनोखे विषय पर अनोखे कार्य करने वाले मनीषी थे। प्रारंभ में डॉ. जयकुमार जैन मुज्जफरनगर ने डॉ. कपूरचंद्रजी का खतौली का परिचय देते हुए उनके जीवन से जुड़े संस्मरण सुनाए। विशिष्ट अतिथि पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रदीप जैन 'आदित्य' झांसी ने डॉ. कपूरचंद्रजी के अवदान को ऐतिहासिक बताया तथा उनकी स्मृति में बुंदेलखंड विश्विद्यालय झांसी में एक शोध पीठ स्थापना की बात कही । समारोह का संचालन पंडित विनोद जैन रजवांस व राजेन्द्र महावीर सनावद ने संयुक्त रूप से किया। आभार डॉ. ज्योति जैन खतौली ने व्यक्त किया।

डॉ. कपूरचंद्र जैन के भाई सुमत जैन सीए झांसी ने अपने अनेक संस्मरण सुनाते हुए उन्हें जीवन निर्माता बताया। शास्त्रि परिषद के अध्यक्ष डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत ने कहा कि अपने को तिल तिल गलाकर साहित्य साधना करने वाले सरस्वती के वरद पुत्र डॉ. कपूरचंद्र जैन के द्वारा नयी-नयी विधाओं पर कार्य किए गए। डॉ. शीतलचंद्र जैन प्राचार्य जयपुर ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम में जैन उनकी 700 पृष्ठों की कृति ऐतिहासिक दस्तावेज बन गयी है। इस पुस्तक को तैयार करने में उन्होंने अथक श्रम किया है। शास्त्रि परिषद के महामंत्री ब्र. जय कुमारजी निशांत भैया टीकमगढ़ ने कहा कि वे सहज- सरल मनीषी थे इसलिए उनका इसलिए कोई विरोधी नहीं था, शास्त्रि परिषद के वे उपाध्यक्ष व पुरस्कार संयोजक रहे। वे पूरे जीवन प्रभावना व साहित्य सेवा में संलग्न रहे। प्राचार्य अरुण जैन सांगानेर ने कहा कि मध्यप्रदेश के दतिया मंडल के वरधुआ नामक छोटे से गांव में जन्में डॉ. जैन ने शिक्षा और समाज के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए जो सदैव स्मरणीय रहेंगे। डॉ सुरेन्द्र जैन भारती बुरहानपुर ने कहा कि उनके साथ मेरा भाई जैसा संबंध था। वे सरल और सहज थे। वे आज भी याद हैं और कभी भूलेंगे भी नहीं। प्रोफेसर विजय कुमार जैन लखनऊ ने डॉ. साब को बड़ा भाई बताते हुए उनकी साहित्य सपर्या को याद किया साथ ही प्रोफेसर वृषभप्रसादजी लखनऊ के अवदान को रेखांकित करते हुए उनके द्वारा कोरोना काल में चलाई गई अक्षय आहार की योजना को महत्वपूर्ण बताया। डॉ. ब्र. राकेश भैया सागर ने विलक्षण प्रतिभा के धनी डॉ. कपूरचंद्रजी ने जैन विद्या शोध संदर्भ पुस्तक तैयार कर महत्वपूर्ण कार्य किया, यह पुस्तक शोधार्थियों के लिए वरदान साबित हुई । दैनिक विश्व परिवार के संपादक प्रवीण जैन झांसी ने कहा कि ज्ञान यज्ञ में अनूठी आहुति देने वाले डॉ. साहब सरलता की प्रतिमूर्ति थे। डॉ. सुनील जैन 'संचय' प्रचार मंत्री शास्त्रि परिषद, ललितपुर ने कहा कि डॉ. कपूरचंद्रजी की कृतियाँ श्रम साध्य, व्यय साध्य और समय साध्य थीं। वे अजातशत्रु थे । उनकी कालजयी कृतियां ऐतिहासिक दस्तावेज हैं, जिनसे वे सदैव अमर रहेंगे। इस अवसर पर जसवीर राणा, डॉ. ज्योति जैन खतौली, डॉ. चंद्रमोहन जैन, कार्तिक जैन, अनिकेत जैन, विभु जैन, वैभव जैन आदि वक्ताओं ने अपने विचार रखे। स्मृति ग्रंथ का विमोचन मंचासीन अतिथियों, विद्वानों एवं परिजनों ने किया।

स्मृति ग्रंथ के प्रधान संपादक डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत, संपादक मंडल ब्र. जयकुमार निशांतजी, पंडित विनोदकुमार जैन रजवांस, डॉ. सुरेन्द्र जैन भारती, ब्र. जिनेश मलैया, प्रबंध संपादक सुमतचंद्र जैन सीए, डॉ. ज्योति जैन, सह संपादक राजेन्द्र जैन महावीर, डॉ. सुनील संचय, डॉ. चंद्रमोहन जैन, जसवीर राणा, परामर्श मंडल के डॉ. शीतलचंद्र जैन, डॉ. जयकुमार जैन, प्राचार्य अरुण जैन एवं संयोजक मंडल के नीरज जैन, कार्तिक जैन, अनिकेत जैन, विभु जैन, वैभव जैन आदि को सम्मानित किया गया।

उल्लेखनीय है कि अनेक पुरस्कारों से अंलकृत डॉ. कपूरचंदजी खतौली ने स्वतंत्रता संग्राम में जैन, प्राकृत एवं जैन विद्या शोध संदर्भ, संविधान विषयक जैन अवधारणाएं, धवल कीर्तिमान, जैन विरासत जैसी कालजयी कृतियों का प्रणयन कर अमूल्य योगदान दिया है। उनकी धर्मपत्नी डॉ. ज्योति जैन जी भी एक विदुषी हैं। उन्होंने छाया की तरह उनके कार्यों में योगदान दिया। डॉ. साहब के जाने के बाद वे निरंतर सक्रिय होकर डॉ. साहब के पद चिन्हों पर चल रही हैं। इस अवसर पर देश भर के विभिन्न अंचलों से आमंत्रित 125 विद्वानों की गरिमामयी उपस्थिति रही। समारोह में डॉ. कपूरचंद जैन खतौली के जीवनवृत्त पर एलईडी के माध्यम से उनके जीवन के विविध पक्षों को दिखाया गया।